तुम गहराई से सवाल करते हो — एक ऐसे मसीही के रूप में जिसने सच में खुद को बदला है और यह ठान लिया है कि चाहे कुछ भी हो, वह अपना क्रॉस उठाएगा और मसीह का मार्ग चलेगा। ये सवाल कभी सिर्फ दिमाग़ में नहीं, बल्कि तुम्हारे दिल की गहराइयों में गूंजते हैं। और बहुत बार तुम्हें लगता है कि सच्चे, संतोषजनक जवाब नहीं मिल रहे।

उदाहरण के लिए, तुम सोच सकते हो:

“जबसे मैंने अपना जीवन प्रभु को समर्पित किया है, भीतर एक
गहरी शांति है। पर बाहर की ज़िंदगी शायद कुछ खास नहीं
बदलती। जैसे ही मैं पवित्र जीवन जीने की कोशिश करता हूँ — पुराने दोस्त दूर हो जाते हैं, रिश्तेदारों का व्यवहार बदल जाता है। मैं निंदा करना बंद करता हूँ, तो लोग कहते हैं कि मैं घमंडी हो गया हूँ। भ्रष्टाचार से इनकार करने पर, काम पर और मुश्किलें आने लगती हैं। मैं दूसरों की मदद करता हूँ, लेकिन धन्यवाद की बजाय आलोचना मिलती है। उपवास और
प्रार्थना की शुरुआत की, लेकिन मुश्किलें गायब नहीं होतीं
— बल्कि बनी रहती हैं। जब मैंने ईश्वर की सेवा शुरू की, तो आर्थिक दिक्कतें और ज़्यादा सामने आने लगीं।”

कभी-कभी तुम उस मुक़ाम पर पहुँच जाते हो जहाँ तुम पूछते हो:

“मैंने अपने आप को इस विश्वास के लिए झुका दिया — तो मुझे क्या मिला? मुझे कोई फ़ायदा नहीं दिखता। वे लोग जो ईश्वर से डरते नहीं, वो समृद्ध, स्वस्थ, और सफल लगते हैं, और फिर भी वे ईश्वर को नहीं मानते। और मैं — मेरी पवित्रता, मेरी बलिदान — अभी भी महसूस करता हूँ कि शायद ईश्वर मुझे वैसे नहीं
देखता या मुझ पर वैसे इनाम नहीं देता जैसे उन पर। क्या यह मेरी गलती है? या क्या इससे कुछ है जो उनके पास है, पर मेरे पास नहीं?”

ये सिर्फ सतही संदेह नहीं हैं — ये गहरे, ईमानदार संघर्ष हैं, जो कई सच्चे संत महसूस करते हैं। असल में, राजा दाऊद ने भी ऐसी ही पीड़ा व्यक्त की।

दाऊद की पुकार:

भजन संहिता 69:7‑12 (Hindi OV) में दाऊद कहता है:

“तेरे ही कारण मेरी निंदा हुई है, / और मेरा मुँह लज्जा से ढँका है। / मैं अपने भाइयों के सामने अजनबी हुआ, / और अपने
सगे भाइयों की दृष्टि में परदेशी ठहरा हूँ। / क्योंकि मैं

तेरे भवन की धुन में जलते जलते भस्म हुआ, / और जो निंदा वे तेरी करते हैं, वही निंदा मुझ को सहनी पड़ी है। / जब मैं रोकर
और उपवास करके दुःख उठाता था, / तब उससे भी मेरी नामधराई ही हुई। / जब मैं टाट का वस्त्र पहिने था, / और अपने लोगों को जो बंदी थे तुच्छ नहीं जानता।”

भजन संहिता 73 (Hindi OV) में दाऊद (असाफ के माध्यम से) उस ईर्ष्या को व्यक्त करता है जो उसे उन लोगों पर होती है जो पापियों की तरह जीते हैं, लेकिन समृद्ध और सुरक्षित दिखते हैं।

लेकिन यहाँ बहुत बड़ी, उज्वल खबर है: ईश्वर ने उनकी पुकार सुनी।।

मलाकी 3:13‑18 (Hindi OV) में लिखा है:

“तुम मुझ पर कटु बातें कहते हो, यहोवा कहता है; … तुम कहते
हो, ‘ईश्वर की सेवा करना व्यर्थ है।’ … किन्तु जो ईश्वर का
डर रखते हैं, वे आपस में कहते हैं: ‘यहोवा देखता और सुनता है,’ और उनके नाम के स्मरण के लिए उसके सामने एक पुस्तक लिखी जाती है। … उसी दिन, मैं उन्हें अपना विशेष भाग बनाऊँगा, और मैं

उन पर दया करूँगा, जैसे एक पिता अपने बेटे पर दया करता है जो उसकी सेवा करता है। … और तुम फिर से भेद करोगे धर्मी और
अधर्मी में, उन में जो ईश्वर की सेवा करते हैं और जो नहीं करते।”

इसका मतलब यह है कि तुम्हारे हर अच्छे काम, तुम्हारी हर बलिदानी सेवा, तुम्हारा अधीनता का पल — ईश्वर इसे भूलता नहीं। स्वर्ग में एक “स्मृति की पुस्तक” है, जहाँ ये सब दर्ज किया जाता है।

इसलिए, यदि तुम सचमुच मसीह का अनुसरण करना चाहते हो, तो:

मुश्किलों के बावजूद ईश्वर की सेवा करते रहो।
बुराई, पाप, और भ्रष्टाचार से लगातार इंकार करो।
न्याय और सच्चाई का मार्ग चुनो, भले ही परिवेश तुरंत न बदले।

तुम्हारी लड़ाइयाँ, तुम्हारी प्रार्थनाएँ, तुम्हारा बलिदान — ये सब व्यर्थ नहीं हैं। ये स्वर्ग में गिने जाते हैं, और तुम्हारा पुरस्कार वास्तविक है।

कुछ आखिरी बातें:

इस दुनिया की चीज़ें अस्थायी हैं — तुम चाहो अमीर हो या गरीब, स्वस्थ हो या बीमार — लेकिन तुम्हारा असली विरासत ईश्वर के पास है।

- [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
- [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] — [illegible], “[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]” [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp